नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

[२२] पुप्फचूलियाणं

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम्||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-**आगममंजूषा** ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है| -मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

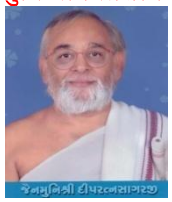

श्रीपुप्फचूलिया· जइ णं भंते! समणेणं भगवता उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा पं० नं०-'सिरि हिरि धिति कित्तीओ बुद्धी लच्छी य होइ बोद्धव्वा। इलादेवी सुरादेवी रस(प्र० सह)देवी गंधदेवी य ॥ ४ ॥ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलाणं दस अज्झयणा पं० पढमस्स णं भंते! उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं० रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया सामी समोसढे, परिसा निग्गया, तेणं कालेणं० सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं जहा बहुपुत्तिया जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगता, नवरं दारियाओ नत्थि, पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं० रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं रायगिहे नयरे सुदंसणे नामं गाहावई परिवसति अड्ढे०, तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स पिया नामं भारिया होत्था सोमाला०, तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स धूया पियाए गाहावतिणीए अत्तिया भूया नामं दारिया होत्था वड्डा वड्डकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडितपुतत्थणी वरगपरिवज्जिया यावि होत्था, तेणं कालेणं० पासे अरहा पुरिसादाणीए जाव नवरयणीए वण्णओ सो चेव, समोसरणं, परिसा निग्गया, तते णं सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा० एवं वदासी- एवं खलु अम्मताओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव देवगणपरिवुडे विहरति, तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं०, तते णं सा भूया दारिया ण्हाया जाव सरीरा चेडीचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमति त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवा० त्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा, तते णं सा भूया दारिया नियपरिवारपरिवुडा रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति त्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवा० त्ता छत्तादीए तित्थकरातिसए पासति, धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुभित्ता चेडीचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवा० त्ता तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासति, तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए भूयाए दारियाए तीसे य महइ० धम्मकहा धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ० वंदति त्ता एवं वदासी- सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं से जहेतं तुब्भे वदह जं नवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि तते णं अहं जाव पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडि०, तते णं सा भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवरं जाव दुरुहति त्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागता रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापितरो तेणेव उवागता, करतल० जहा जमाली आपुच्छति, अहासुहं देवाणुप्पिए !०, तते णं से सुदंसणे गाहावई विउलं असणं० उवक्खडावेति, मित्तनाति० आमंतेति त्ता जाव जिमियभुत्तुत्तरकाले सुईभूते मित्तणाइसमणितो कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति त्ता एवं वदासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भूयाए दारियाए पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह, तते णं ते जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से सुदंसणे गाहावई भूयं दारियं ण्हायं जाव विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेति त्ता मित्तनाति जाव रवेणं रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ त्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागते छत्ताईए तित्थयरातिसए पासति त्ता सीयं ठावेति त्ता भूयं दारियं सीयाओ पच्चोरुभेति त्ता तते णं तं भूयं दारियं अम्मापियरो पुरतो काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागते, तिक्खुत्तो वंदति नमंसति त्ता एवं वदासी- एवं खलु देवाणुप्पिया! भूया दारिया अम्हं एगा धूया इट्ठा०, एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा भीया जाव देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयाति, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणीभिक्खं दलयेमुत्ति, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं, अहासुहं देवाणु०, तते णं सा भूता दारिया पासेणं अरहया० एवं वुत्ता समाणी हट्ठा उत्तरपुरच्छिमं० सयमेव आभरणमल्लालंकारं उम्मुयइ जहा देवाणंदा पुप्फचूलाणं अंतिए जाव गुत्तबंभयारिणी, तते णं सा भूता अज्जा अण्णदा कदाइ सरीरबाउसिया जाया यावि होत्था अभिक्खणं २ हत्थे धोवति एवं सीसं धोवति मुहं धोवति थणगंतराइं धोवति कक्खंतराइं धोवति गुज्झंतराइं धोवति जत्थ२विय णं ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेति तत्थ२विय णं पुव्वामेव पाणएणं अब्भुक्खेति ततो पच्छा ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेति, तते णं तातो पुप्फचूलातो अज्जातो भूयं अज्जं एवं वदासी-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु कप्पति अम्हं सरीरबाउसियाणं होत्तए, तुमं च णं देवाणुप्पिए! सरीरबाउसिया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव निसीहियं चेतेसि, तं णं तुमं देवाणुप्पिए! एयस्स ठाणस्स आलोएहि०, सेसं जहा सुभद्दाए जाव पाडियक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तते णं सा भूता अज्जा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवति जाव चेतेति, तते णं सा भूया अज्जा बहूहिं चउत्थछट्ठ० बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव ओगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववण्णा पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ता, एवं खलु गो०! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता०, ठिई एगं पलिओवमं, सिरी णं भंते! देवी जाव कहिं गच्छिहिति०?, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति०, एवं खलु जंबू! निक्खेवओ, एवं सेसाणवि नवण्हं भाणियव्वं, सरिसनामा विमाणा कप्पे, पुव्वभवे नगरचेइयपियमादीणं अप्पणो य नामादी जहा संगहणीए, सव्वा पासस्स अंतिए निक्खंता तातो पुप्फचूलाणं सिस्सिणीयातो सरीरबाउसियाओ सव्वाओ अणंतरं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति ।२९॥पुप्फचूलियाओ समत्ताओ चउत्थो वग्गो ११॥